संपादकीय

धनबल छल

को हाल ही में प्रवर्तन निदेशालय के छापे में झारखंड की राजधानी रांची में राज्य सरकार के एक मंत्री के निजी सचिव के सहायक के घर से करोड़ों रुपये के ढेर बरामद होना, हर नागरिक को परेशान कर गया। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि यह धन कैसे जुटाया गया होगा और चुनाव के दौरान इसकी क्या भूमिका हो सकती है। लेकिन सवाल यह है कि एक अदने से आदमी के घर इतना धन कैसे पहुंचा? कौन इस खेल के खिलाड़ी हैं? पैसा किसका था? निस्संदेह, ऐसे तमाम सवाल आम नागरिकों को परेशान करते हैं। हालांकि,यह छापेमारी झारखंड ग्रामीण विकास विभाग के मुख्य अभियंता से जुड़े एक मामले में हुई थी, जिसे पिछले वर्ष ईडी ने धन शोधन के मामले में गिरफ्तार किया था। धनशोधन का एक हिस्सा मंत्री के निजी सचिव व उसके घरेलू सहायक से भी जुड़ा था। जाहिर बात है कि सचिव व सहायक तो मात्र मोहरे हैं और बड़े स्तर के संरक्षण के बिना नोटों के अंबार नहीं लगाये जा सकते। प्रकरण यह भी बताता है कि कैसे विकास कार्यों का पैसा उच्च अधिकारियों की मिलीभगत से राजनेताओं तक पहुंचता है। बहरहाल, हाल के दिनों में आम चुनाव की प्रक्रिया में चुनाव आयोग की सख्ती के चलते भारी मात्रा में जो नगदी आदि बरामद की गई है, वह भी चौंकाने वाली है। पहले चरण के मतदान से पूर्व चार हजार छह सौ करोड़ रुपये मूल्य की बरामदगी हो चुकी थी। यह बरामदगी आजाद भारत के आम चुनावों के दौरान हुई सबसे बड़ी बरामदगी है। आयोग के अधिकारियों का कहना है कि हर रोज सौ करोड़ रुपये मूल्य की बरामदगी हो रही है। इस बरामदगी में पैंतालीस प्रतिशत हिस्सा मादक पदार्थों का रहा है। जाहिर है ये नगदी, सामान व नशीले पदार्थ मतदाताओं को बहकाने,भ्रमित करने व लुभाने के लिये ही ले जाए जा रहे थे। ये कोशिशें धनबल के जरिये चुनाव परिणामों को प्रभावित करने की हो रही थीं। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि चुनाव के दौरान काले धन को सफेद करने की कवायदें खासी तेज हो जाती हैं। इस कालेधन का महज एक छोटा हिस्सा ही चुनाव आयोग और दूसरी नियामक एजेंसियों की नजर में आता है। राजनीतिक दल भी पांच साल तक ज्ञात-अज्ञात स्रोतों से अर्जित धन को चुनावी चंदा बताकर मतदाताओं को बहकाने-लुभाने में खर्च करते रहे हैं। बहुत सारे अनैतिक धंधों से जुड़े लोग भी चुनाव के दौरान जीतने वाले राजनीतिक दल या प्रत्याशी को आर्थिक सहायता देकर बाद में मोटा मुनाफा हासिल करते हैं। यह विडंबना ही है कि आजादी के साढ़े सात दशक बाद भी हम अपनी चुनाव प्रणाली को पारदर्शी व स्वतंत्र नहीं बना सके। यही वजह है कि चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले संदिग्ध धन का उपयोग कई तरीके से किया जाता रहा है। हाल के दिनों में शीर्ष अदालत की सक्रियता से चुनावी बॉन्डों के लेनदेन में जो विसंगतियां उजागर हुई उसे सारे देश ने देखा। कैसे दागदार कंपनियां भी चुनावी बॉन्ड खरीदकर पाक-साफ बनी और बड़ी योजनाएं हासिल करने में सफल हुई। जाहिर है कि बड़ी कंपनियां राजनीतिक दलों के चंदे में निवेश इसी मकसद से करती हैं कि जब उनकी सरकार बने तो मुनाफे के शार्टकट हासिल किये जा सकें। लोकतंत्र में राजनीतिक दलों की कारगुजारी पर नजर रखने वाली स्वयंसेवी संस्थाओं ने कई ऐसे रुझान उजागर भी किये। इस मामले में अदालतों के अलावा चुनाव आयोग को भी अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप लोकतंत्र को प्रभावित करने वाले धनबल पर अंकुश लगाने के लिये सख्त कदम उठाने होंगे। इस दौरान उन सरकारी अधिकारियों पर भी निगाह रखी जानी चाहिए जो अनुचित ढंग से राजनीतिक दलों को मदद करने का प्रयास करते हैं। उनकी कोशिश होती है कि भविष्य में उस दल की सरकार बनने पर मलाईदार पद व मनचाही पोस्टिंग हासिल की जा सके। आयोग को चुनाव प्रक्रिया के दौरान अनुचित धन के प्रवाह पर अंकुश लगाने के लिये कठोर कदम उठाने चाहिए। इस दौरान मादक पदार्थों व शराब की बड़ी मात्रा में बरामदगी भी गंभीर चिंता का विषय है। चुनाव आयोग की शक्तियों के विस्तार की भी जरूरत महसूस की जा रही है।

सीमांत गांवों के विकास से टूटेंगे चीन के मंसूबे

ले. जनरल प्रदीप बाली (अ.प्रा.)

इतिहास को मनमाफिक गढ़ना और भौगोलिक हकीकतों से छेड़छाड़ चीन की प्रवृत्ति रही है। यह उसकी आधिपत्यवादी प्रवृत्ति और मंसूबों को सुहाता है। इसके लिए, उसे वास्तविकता से परे के तथ्यों को गढ़ने की जरूरत पड़ती है। चीन अक्सर भारतीय भूमि के कई हिस्सों पर अपना दावा ठोकता आया है, पिछले कई सालों से अक्सर अरुणाचल प्रदेश में बस्तियों और भूभाग का नाम बदलने में उसे खुशी महसूस होती है। चीनी नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने 2017 में गढ़े नामों की पहली सूची जारी की थी, जिसमें छह जगहों का जिक्र था। फिर 15 नये नामों वाली दूसरी सूची 2021 में आई, 2023 की सूची में 11 जगहों का नाम बदला हुआ था। भौगोलिक नाम बदलने के इस खेल में चौथी और नवीनतम सूची 1 अप्रैल, 2024 को जारी की गई है, जिसमें अरुणाचल प्रदेश की 30 और जगहें शामिल की गई हैं। खुद अरुणाचल प्रदेश का नाम चीनियों ने 'ज़गनान' रखा हुआ है। उम्मीद के मुताबिक भारत ने कड़े प्रतिरोध के साथ इस नौटंकी को खारिज किया है। इस कृत्य के समांतर वास्तविक नियंत्रण रेखा के उत्तर में सीमांत इलाकों को विकसित करने की आड़ में चीन शियाओकांग नामक रिहायशी बस्तियां समूची सीमा रेखा के ठीक बगल में स्थापित कर रहा है। पिछले सालों में लगभग 600 ऐसे गांव बसाए जा चुके हैं और 'विकास कार्यक्रम' के तहत और 175 बस्तियां बनाने की योजना है। बिना शक यह सारी प्रक्रिया चीन के इलाकाई दावों को पुष्ट करने और पीपुल्स लिबरेशन आर्मी का अतिरिक्त सहायता तंत्र बनाने के मकसद से है। यहां चीन 'कानूनी रणनीति' का कपटी खेल भी खेल रहा है। भारत के साथ 'सीमा रक्षा सहयोग संधि-2005' के मुताबिक जब कभी वास्तविक सीमा नियंत्रण रेखा की निशानदेही होगी तो पूर्व-स्थापित आबादियों को नहीं छेड़ा जाएगा। चीनी रणनीति का यह रंग-ढंग अन्य मुल्कों से सीमा विवादों में भी झलकता है। जापान प्रशासित सेन्काकु द्वीप को दियाओऊ नाम देकर, चीन उसे अपना हिस्सा बताने का दावा करता आया है। सर्वविदित है कि चीन की तथाकथित 'नौ-बिंदु सीमारेखा' समस्त दक्षिणी चीन सागर में उसके इलाकाई दावों को मजबूत बनाने का एक पैंतरा है। यह अंतर्राष्ट्रीय कानून का उल्लंघन है, खासकर 'संयुक्त राष्ट्र सागरीय कानून अधिवेशन' के प्रावधानों का। दावेदारी की यह रेखा ब्रुनेई के विशेष निर्यात क्षेत्र, इंडोनेशिया, फिलीपींस, ताईवान और वियतनाम के इलाकों का अतिक्रमण करती है। चीन समुद्र में कंक्रीट डालकर छोटे द्वीपों और उभरी चट्टानों को बड़े टापुओं में तब्दील कर रहा है। इन मानव-निर्मित भौगोलिक द्वीपों का निर्माण करने के पीछे उद्देश्य है सैन्य लाभ सुदृढ़ करना और अपने पड़ोसियों को जताना कि भिड़ने पर भविष्य में क्या हो सकता है। भौगोलिक और ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने की छूट लेने की उसकी यह प्रवृत्ति भूटान में 2017 में स्पष्ट जाहिर हुई, जब चीन की पीएलए ने डोकलाम पठार को झम्पेरी रिज तक कब्जाने का यत्न किया। इसने भारत को क्रोधित किया क्योंकि यह अतिक्रमण हमारी रक्षा संबंधी चिंताओं को बढ़ाता है। तभी भारतीय सेना को यह कब्जा आमने-सामने के टकराव से फिल करना पड़ा। किसी इलाके का अतिक्रमण कर उसका 'बधियाकरण' करने का एक उदाहरण तिब्बत है, जिसे चीन ने 1951 ने कब्जाया था और 1959 में पूर्ण नियंत्रण बना लिया। चीनी शासकों ने दिखावे को 'तिब्बत सार्वभौमिक क्षेत्र' की स्थापना की है, जिसे आमतौर पर 'राजनीतिक तिब्बत' कहा जाता है और इसका क्षेत्रफल शेष तिब्बत से कहीं छोटा है। ऐतिहासिक रूप से, जनजातीय तिब्बत में तीन मुख्य इलाके हैं- यूत्सांग, खाम और अम्दो। वर्ष 1955 में अम्दो का विलय किंगहाई प्रांत में कर दिया और 1957 में खाम कोगांज़े सार्वभौमिक प्रदेश के साथ मिला दिया गया। इसी प्रकार तिब्बत के बाकी जनजातीय इलाकों का विलय गनसू और युनान प्रांतों में कर डाला। वास्तव में, मूल तिब्बत राज्य में अब सिर्फ यू-त्सांग क्षेत्र ही 'राजनीतिक तिब्बत' है। वर्ष 1911 और 1951 के बीच, तिब्बत चीनी गणतंत्र के मंसूबों से कमोबेश मुक्त रहा। अम्दो में 14वें दलाईलामा का जन्म हुआ और उनके अंगरक्षक खाम इलाके से हैं, जिन्हें तिब्बतियों की लड़ाकू जाति के तौर पर जाना जाता है। चीन ने साथ लगते और बहुत ज्यादा जनसंख्या के बोझ तले दबे हान प्रांत से चीनी मूल के लोगों को तिब्बत के विभिन्न हिस्सों में बसाकर अंदरूनी जनसंख्या स्थानांतरण करवाया है। अधिकांश सीमांत गांव समूची वास्तविक सीमा नियंत्रण रेखा के ठीक साथ सटाकर बनाए गए हैं, जिनमें लगभग सभी 'हान' हैं। इन चीनी प्रवासियों को वहां बसने-रहने की एवज़ में काफी आर्थिक लाभ दिए जाते हैं–और तिब्बत का जातीय स्वरूप बदलने में यह मुख्य अवयव है। चीन की धूर्त रणनीति के जवाब में भारत की प्रतिक्रिया बेपरवाही से लेकर बड़ी-बड़ी बातें करने तक ही रही है। नाम बदलने के नवीनतम खेल पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की प्रतिक्रिया बेहद सधी रही। 9 अप्रैल को पूरबी अरुणाचल प्रदेश में एक जनसभा में उन्होंने कहा : 'मैं अपने पड़ोसी को बताना चाहता हूं कि नाम बदलने से कुछ हासिल नहीं होने वाला। कल को यदि हम चीन के राज्यों का नाम बदल दें तो क्या वह उन्हें हमें सौंप देगा?' चीन से हमारे सीमा संबंधी मुद्दे द्विपक्षीय चिंताओं वाले रहे हैं। तथापि, पिछले कुछ समय से, अमेरिका भारत की पीठ पर हाथ रख रहा है। भारत में अमेरिकी राजदूत एरिक गार्सेटी ने हाल ही में बयान दिया : 'भारत के इलाकों का नाम बदलना चीन का काम नहीं है और वे भारतीय भूभाग का हिस्सा हैं', यह स्वागतयोग्य कदम है। पूरब में देखें तो शंघाई सहयोग संगठन में चीन के विकृत दावों ने तीखी अंतर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया पैदा की है। चाहे यह क्वाड संघ हो (जिसमें भारत सहित अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान हैं) या ऑस्ट्रेलिया, यूके एवं अमेरिका से बना ऑकस संघ या फिर अमेरिका, जापान, फिलीपींस का त्रिकोणीय गुट, इन सबका ध्यान शंघाई सहयोग संगठन की बैठकों में चीनी मंसूबों का विरोध कर वैधानिक विश्व-व्यवस्था बनाने पर केंद्रित है। भारत को चीन द्वारा ऐतिहासिक-भौगोलिक तथ्यों से छेड़छाड़ के प्रयासों का प्रत्युत्तर शिद्दत और निरंतरता से देने की जरूरत है। हमें इन मुद्दों को मजबूती से उठाना होगा और चीनी दावों के विरोध में लिखित प्रतिरोध करना होगा। वर्ना उन्हें तथ्य के तौर पर स्वीकार कर लिया जाएगा। सीमावर्ती इलाके में हमारी तरफ की भौगोलिकता अत्यधिक दुरूह है और भूभाग अधिकांशतः तीखा पर्वतीय या घना जंगल है। यह हाल ठीक वास्तविक नियंत्रण रेखा तक है। अपने इलाके में हमें बुनियादी ढांचा विकसित करने का काम निरंतर जारी रखना होगा। सीमा सड़क संगठन इस चुनौती से पार पाने में प्रयासरत है। हाल ही में अरुणाचल प्रदेश में सेला सुरंग का उद्घाटन भारत की वास्तविक नियंत्रण सीमा रेखा को लेकर तैयारियों को बल देगा। हालांकि यह काम बहुत विशाल स्तर का है और हमें तीखी ऊंचाइयों पर काम करने की सामर्थ्य बढ़ानी होगी। लोगों का सीमांत इलाके से पलायन रोकने को हमें सीमा पर गांव बसाने को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इसके लिए आर्थिक लाभ की पेशकश और तेज गति की संचार व्यवस्था बनाना पहला कदम है। जहां सेना इन कामों में मददगार हो सकती है, वहीं इस सबके लिए नीतियां बनाना राजनीतिक नेतृत्व का कार्यक्षेत्र है। सबसे ऊपर, जो भारतीय नागरिक सीमावर्ती इलाके में बसे हैं उनकी संवेदनशीलता को सदा ज़हन में रखना आवश्यक है।

यह एक निष्क्रिय क्रिया है जो आपकी सबसे अच्छी मदद करेगी, तो कोई भी मंत्र बोलने की आवश्यकता नहीं है। आत्मसाक्षात्कार के बाद आपको पता होना चाहिए, कौन सा मंत्र कहां बोलना है। उसके बारे में बड़ा विज्ञान है।

सहज योग

कुंडलनी जागरण के फायदे

आपको अब संपर्क दे दिया है। वह आपको जलाता है, वह आपको बेचैन करता है। कभी आपको धड़कन महसूस होती है, कभी आपको लगता है की कुछ बह रहा है। इस तरह आपको पता चलता है। यह वह ज्ञान है, जिसके लिए आपको स्कूल जाने की ज़रुरत नहीं है। मैं यहां हूं इन सबको समझाने के लिए और आपको बताने के लिए और फिर आप देखिए वह सही है या नहीं। आप बताए की ऐसा है या नहीं। केवल यह नहीं की आप दूसरे व्यक्ति को महसूस कर सकते है, पर उसके साथ आप उस व्यक्ति की कुंडलनी भी उठा सकते हैं। कुंडलनी उठाने से आप उसकी शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक परेशानियां भी ठीक कर सकते हैं। उन्हें आत्मसाक्षात्कार देने से आप उनकी आध्यात्मिक परेशानियां दूर कर सकते है, और इस तरह वे परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर सकते हैं।यदि आप में से कोई भी कुछ प्रश्न पूछना चाहे या कुछ समझना चाहे, तो श्री माता जी उसका उत्तर देने के लिए तैयार हैं। आपका चित्त हल्का होना चाहिए, फ्री होना चाहिए। आपके आत्मसाक्षात्कार के समय जब कुंडलनी जागृत करते हैं, आपका पूरा चित्त अंदर लिया जाता है और कुंडलनी उठते समय उसे अपने सिर पर बिठा-कर चित्त को सहस्त्रार से बाहर ले जाती है। इसलिए उस समय सबसे अच्छा है की अपने आप को ढीला छोड़ दे । सिर्फ नीचे बैठे, उसे देखे क्या हो रहा है, कुछ भी करने की जगह। यह एक निष्क्रिय क्रिया है जो आपकी सबसे अच्छी मदद करेगी, तो कोई भी मंत्र बोलने की आवश्यकता नहीं है। आत्मसाक्षात्कार के बाद आपको पता होना चाहिए, कौन सा मंत्र कहां बोलना है। उसके बारे में बड़ा विज्ञान है ।

तो पूरा तंत्र जिसे आप कुंडलनी कहते हैं, वहां है। पर आपको पता होना चाहिए। उसे कैसे नियंत्रित करना है या संभालना है। कौन सा मंत्र कहना है, क्या कहना है कौन से चक्र में कुछ कमी है, उसमें आपको निपुण होना है। यह कठिन नहीं है, कोई भी इसमें निपुण हो सकता है। एक छोटी लड़की है प्रज्ञा, उसने भी कुंडलनी में निपुणता हासिल की है वो कर सकती है, तो आप लोग क्यों नहीं कर सकते? तो आपको सिर्फ पता होना चाहिए की कौन सा चक्र ख़राब है और आप उन्हें ठीक भी कर सकते हैं। अभी जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं है, आप लोग अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करेंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है, तो आप जाएंगे और उन लोगों से मिलेंगे। वहां आप जाएं और वो आपको बताएंगे की आपको आगे क्या करना है। उसकी गहनता में जाइए और खुद को स्थापित कीजिए और कुंडलनी में निपुण होइए। यह सब गुह्य गुह्यतम है। मैंने उन्हें बताया है और आपको उसका पूरा ज्ञान मिलेगा।

प्रस्तुति : धीरज सिंह

शख्सियत | योगेन्द्र सिंह यादव

परमवीर चक्र से सम्मानित भारतीय सैन्य अधिकारी

सूबेदार मेजर और मानद कैप्टन योगेन्द्र सिंह यादव पीवीसी एक सेवानिवृत्त भारतीय सैन्य अधिकारी हैं, जिन्हें कारगिल युद्ध के दौरान उनके कार्यों के लिए भारत के सर्वोच्च सैन्य पुरस्कार, परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। वह अब तक परमवीर चक्र पाने वाले सबसे कम उम्र के प्राप्तकर्ता हैं, जिन्होंने इसे 19 साल की उम्र में प्राप्त किया था।

सूबेदार मेजर यादव का जन्म 10 मई 1980 को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के औरंगाबाद अहीर में एक यादव परिवार में हुआ था।उनके पिता करण सिंह यादव ने कुमाऊं रेजिमेंट में सेवा की और 1965 और 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्धों में भाग लिया। यादव 16 साल और पांच महीने की उम्र में भारतीय सेना में शामिल हुए। यादव को 18 ग्रेनेडियर्स और घातक फोर्स कमांडो प्लाटून के साथ भर्ती किया गया था, जिसे 4 जुलाई 1999 की सुबह टाइगर हिल पर तीन रणनीतिक बंकरों पर कब्जा करने का काम सौंपा गया था। बंकर एक ऊर्ध्वाधर, बर्फ से ढके शीर्ष पर स्थित थे, 1,000 फीट (300 मीटर) चट्टान का मुख। यादव ने स्वेच्छा से हमले का नेतृत्व किया, चट्टान पर चढ़ गए, और रस्सियां लगाईं जिससे इस क्षेत्र पर और हमले किए जा सकें। आधे रास्ते में, दुश्मन के बंकर से मशीन गन और रॉकेट फायर हुए, जिसमें प्लाटून कमांडर और दो अन्य लोग मारे गए। अपनी कमर और कंधे में कई गोलियां लगने के बावजूद, यादव शेष 60 फीट (18 मीटर) चढ़ गए और शीर्ष पर पहुंच गए। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद, वह रेंगते हुए पहले बंकर तक पहुंचे और ग्रेनेड फेंका, जिसमें चार पाकिस्तानी सैनिक मारे गए और दुश्मन की गोलीबारी को बेअसर कर दिया। इससे बाकी प्लाटून को अपने दो साथी सैनिकों के साथ बंकर पर चढ़ने का मौका मिल गया और आमने-सामने की लड़ाई में शामिल हो गए, जिसमें चार पाकिस्तानी सैनिक मारे गए। बाद में पलटन टाइगर हिल पर कब्जा करने में सफल रही। हालांकि यादव को 17 गोलियां लगी थी, फिर भी उन्होंने उसे पकड़ने में प्रमुख भूमिका निभाई। यादव को मरणोपरांत परमवीर चक्र देने की घोषणा की गई थी, लेकिन जल्द ही पता चला कि वह एक अस्पताल में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे, और यह उनका हमनाम था जो मिशन में मारा गया था।

जीवन ऊर्जा | नयनतारा सहगल: जन्म, 10 मई 1927 | जन्म

सभ्यता मनुष्य में ही वास करती है

नयनतारा सहगल का जन्म 10 मई 1927 को हुआ था। वे एक भारतीय लेखिका हैं जो अंग्रेजी भाषा में लिखती है। वे पहली भारतीय महिला लेखिका हैं जिन्हें अंग्रेजी लेखन के लिए पहचान मिली। वे भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की बहन विजय लक्ष्मी पंडित-रणजीत सीताराम पण्डित की पुत्री हैं।

सत्य एक शक्तिशाली औषधि है। इसे बहुत सावधानी से निर्धारित किया जाना चाहिए। किसी भी क्षेत्र में पसंद एक जोखिम है, लोगों का मूल विभाजन उन लोगों का है जो पसंद में विश्वास करते हैं और जो इसे अविश्वास करते हैं। जाति में कोई पदार्थ नहीं था, एक छायादार आकार की तरह जो अंधेरे में डरता है,लेकिन दिन के उजाले से गायब हो जाता है। अंत में, देश, लोगों की तरह, अकेले हैं, और वास्तविक चीजें जो की जानी चाहिए, उन्हें बिना मदद के किया जाना चाहिए। कट्टरपंथी और चरमपंथी प्रतिमानों के दिल में मानवाधिकारों की समानता और सार्वभौमिकता की अस्वीकृति है, जो

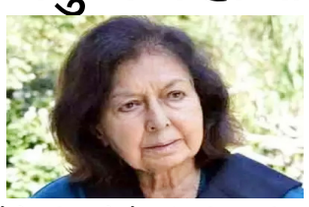

दोनों महिलाओं के सांस्कृतिक अधिकारों को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, उन सिद्धांतों की अटूट रक्षा को एक लैंगिक समावेशी मानवाधिकार प्रतिक्रिया की कसौटी बनाते हैं। किसी भी प्रकार का जुनून शायद ही कभी शिष्टाचार के नियमों द्वारा शासित होता है। सभ्यता ही मनुष्य में स्थित है। जब कोई राष्ट्र स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर रहा होता है, तो यह अपने सबसे अच्छे और महानतम रूप में होता है। स्वतंत्रता प्राप्त होने पर क्षय और भ्रष्टाचार का पालन होता है। एक बार जब आप सच्ची स्वतंत्रता जान लेते हैं, तो आप इससे कम पर संतुष्ट नहीं होंगे। समाज का निर्माण इस बात पर होता है कि लोग क्या याद रखना पसंद करते हैं और क्या भूल जाते हैं। नयनतारा सहगल देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की भांजी हैं। आप कभी नहीं जानते कि क्या यह केवल ब्लैकमेल का एक रूप है, और इसलिए, इसका विरोध किया जाना चाहिए, क्या यह एक वास्तविक बीमारी है जो आपके द्वारा दूसरे व्यक्ति में रहने और विश्वास करने से हुई है। किसी भी प्रकार का जुनून शिष्टाचार के नियमों द्वारा शासित नहीं होता है। जिन वास्तविक चीजों को जानने की जरूरत होती है, उन्हें बिना किसी की मदद के करना पड़ता है।

सर्वसिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ बिजाना शाजापुर मध्य प्रदेश

विजय के लिए स्वयं पर विश्वास होना चाहिए

सर्वसिद्ध श्री बगलामुखी तारा कृपा के बल के साथ ही जीवन के किसी भी क्षेत्र में विजय के लिए स्वयं पर विश्वास होना आवश्यक है। बगलामुखी मंत्रजीवन में सफल होने का एक सीधा सा मंत्र है और वो ये कि आपकी उम्मीद स्वयं से होनी चाहिए किसी और से नहीं। स्वयं के पैरों पर उम्मीद ही हमें किसी दौड़ में विजेता बनाती है। बगलामुखी मंत्र के प्रभाव से राज योग शत्रु शांत एवम बुद्धि प्रबल होती है समस्त रोगठिक होते है अ गर सर्वत्र विजय चाहते हों तो मां बगलामुखी की आराधना अवश्य करें

सूर्य स्वयं के प्रकाश से चमकता है और चन्द्रमा को चमकने के लिए सूर्य के प्रकाश पर निर्भर रहना होता है। दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित होने की उम्मीद रखने के कारण ही चन्द्रमा की चमक एक जैसी नहीं रहती। कभी ज्यादा कभी कम तो कभी पूरी तरह क्षीण भी हो जाती है।

कमल उतनी ही देर अपना सौंदर्य बिखेरता है जितनी देर उसे सूर्य का प्रकाश प्राप्त होता है। जीवन में सफल एवं सदा खुश रहना है तो दूसरों से किसी भी प्रकार की उम्मीद छोड़कर बगलामुखी की कृपा के बल का भरोसा बनाए रखकर स्वयं ही उद्यम में लगना होगा ताकि संपूर्ण जीवन प्रसन्नता से जिया जासके बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ पर नित्य हवन होता है आप भी करा सकते हैं मां की कृपा प्राप्त होती है

पंडित कैलाशचंद्र शर्मा
वैदिक सनातन संस्कृति के प्रचारक व सर्व सिद्ध श्री बगलामुखी तारा महाशक्ति पीठ के संस्थापक।
मो. नं. 9425980556

प्रेरक प्रसंग

मनहूस रामैया

रामैया नाम के आदमी के विषय में नगर-भर में यह प्रसिद्ध था कि जो कोई प्रातः उसकी सूरत देख लेता था, उसे दिन-भर खाने को नहीं मिलता था। इसलिए सुबह-सुबह कोई उसके सामने आना पसंद नहीं करता था। किसी तरह यह बात राजा कृष्णदेव राय तक पहुँच गई। उन्होंने सोचा, 'इस बात की परीक्षा करनी चाहिए।' उन्होंने रामैया को बुलवाकर रात को अपने साथ के कक्ष में सुला दिया और दूसरे दिन प्रातः उठने पर सबसे पहले उसकी सूरत देखी। दरबार के आवश्यक काम निबटाने के बाद राजा जब भोजन के लिए अपने भोजन कक्ष में गए तो भोजन परोसा गया। अभी राजा ने पहला कौर ही उठाया था कि खाने में मक्खी दिखाई दी। देखते-ही-देखते उनका मन खराब होने लगा और वह भोजन छोड़कर उठ गए। दोबारा भोजन तैयार होते-होते इतना समय बीत गया कि राजा की भूख ही मिट गई।

राजा ने सोचा-'अवश्य यह रामैया मनहूस है, तभी तो आज सारा दिन भोजन नसीब नहीं हुआ।' क्रोध में आकर राजा ने आज्ञा दी कि इस मनहूस को फाँसी दे दी जाए। राज्य के प्रहरी उसे फाँसी देने के लिए ले चले। रास्ते में उन्हें तेनालीराम मिला। उसने पूछा तो रामैया ने उसे सारी बात कह सुनाई। तेनालीराम ने उसे धीरज बँधाया और उसके कान में कहा, 'तुम्हें फाँसी देने से पहले ये तुम्हारी अंतिम इच्छा पूछेंगे। तुम कहना, 'मैं चाहता हूँ कि मैं जनता के सामने जाकर कहूँ कि मेरी सूरत देखकर तो खाना नहीं मिलता, पर जो सवेरे-सवेरे महाराज की सूरत देख लेता है, उसे तो अपने प्राण गँवाने पड़ते हैं।' यह समझाकर तेनालीराम चला गया। फाँसी देने से पहले प्रहरियों ने रामैया से पूछा, 'तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है?' रामैया ने वही कह दिया, जो तेनालीराम ने समझाया था। प्रहरी उसकी अनोखी इच्छा सुनकर चकित रह गए। उन्होंने रामैया की अंतिम इच्छा राजा को बताई।

सुनकर राजा सन्न रह गए। अगर रामैया ने लोगों के बीच यह बात कह दी तो अनर्थ हो जाएगा। उन्होंने रामैया को बुलवाकर बहुत-सा पुरस्कार दिया और कहा-'यह बात किसी से मत कहना।'

यह अखबार "माध्यम कार्पोरेट सर्विसेज लि. " के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अरुणलाल द्वारा ग्राउंड फ्लोर, ऑफिस नं. 2, के. के. चैम्बर्स, पुरुषोत्तमदास ठाकरदास रोड, फोर्ट, मुंबई- 400001 से प्रकाशित एवं सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नं. 4, एन.के.इंडस्ट्रियल इस्टेट, इनसाइड प्रवासी इंडिस्ट्रयल इस्टेट गेट नं. 2, गोरेगांव पू., मुंबई-63 से मुद्रित। फोन नं. 022-66555719 ईमेल : indiagroundreport@gmail.com **कार्यकारी संपादक :** राजा आदाटे (पी.आर.बी. अधिनियम के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार)।